स्वामी अग्निवेश ने रसोइयों के पक्ष में बुलंद की आवाज

कम से कम 10,000 रुपए प्रतिमाह मानदेय देने की मांग

नई दिल्ली।17 Nov,2016 मानदेय बढ़ाने को लेकर जंतर-मंतर पर हो रहे मध्याह्न भोजन रसोइया फ्रंट के धरना-प्रदर्शन को समाज सुधारक और बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने अपना समर्थन दिया। इस अवसर पर उन्होंने रसोइयों के पक्ष में अपनी आवाज को बुलंद करते हुए उनके लिए कम से कम 10,000 रुपए प्रतिमाह की मांग की।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश ने प्रश्नात्मक लहजे में कहा कि केंद्र सरकार के चपरासी को 21000 रुपए प्रतिमाह का वेतन मिलता है तो बच्चों को खाना बनाकर खिलाने व उनके जूठे बर्तन धोने वाले रसोइयों को मात्र एक हजार रुपए क्यों ? उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि यह देश का दुर्भाग्य है कि दूसरों के बच्चों को खाना खिलाने हमारी माताएं बहने अपने बच्चों का पेट नहीं भर पा रही हैं। आर्थिक दिक्कत के चलते उन्हें पढ़ा नहीं पा रही हैं। यह कैसा विकास है ?

उन्होंने कहा कि विकास का ढिंढोरा पीटने वाली सरकार को समझना होगा कि भुखमरी के मामले में श्रीलंका, बांग्लादेश, दक्षिण अफ्रीका जैसे देश भी हमसे आगे हैं। केंद्र सरकार द्वारा 500-1000 के नोट बंद करने पर स्वामी अग्निवेश ने कहा कि काला धन तो पूंजीपतियों के पास है और परेशान आम आदमी हो रहा है। देश के गिने-चुने पूंजीपतियों ने एक लाख 14 हजार करोड़ रुपए का लोन बैंकों से ले लिया और उसे डकार गए।

सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बावजूद केंद्र सरकार न तो उनसे यह धनराशि ले पा रही है और न ही उनके नाम सार्वजनिक कर पा रही है। शर्मनाक बात यह है कि नाम सार्वजनिक न करने के पीछे तर्क दिया जा रहा है कि ये लोग देश के इज्जतदार लोग हैं। उन्होंने कहा कि किसान और मजदूर को हजारों की संख्या में लिया लोन समय से न लौटाने पर जेल में ढूंस दिया जाता है और हजारों करोड़ का लोन लेने वाले का नाम भी सार्वजनिक नहीं किया जाता। पूंजीपतियों के लिए काम करने वाली सरकार अपने को गरीब हितैषी बता रही है। देश में गरीबी मिटाने के नाम पर गरीब को ही मिटा दिया जा रहा है।

स्वामी अग्निवेश ने सरकारों को कटघरे में खड़ा करते हुए कहा कि सभी सरकारें विकास के तरह-तरह के दावे करती हैं पर गरीब और अमीर के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही है। उन्होंने आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि किसान-मजदूर सड़कों पर उतरकर अपना हक मांगे। रसोइयां फ्रंट के कार्यकर्ताओं को उन्होंने आश्वस्त किया कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं हो जाती तब तक वह चैन से नहीं बैठेंगे।